2024

श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - २

जुलाई-

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. धर्म की ..... में रहकर ही अन्य पुरुषार्थ साधना है ।
२. ..... के अक्षर पंच परमेष्ठि के प्रतिकरुप है ।
३. करण..... सर्व जीवो में हिनाधिक प्रमाण में होता ही है ।
४. इस धरती पर ..... को देव मानकर पूजा की जाती है ।
५. एक शरीर में अनंत जीव हो वह ..... वनस्पतिकाय है ।
६. प्रभु समवशरण में ..... से प्रविष्ट हुए ।
७. जीवन में आगे बढना हो तो हमारे जीवन बगिया से ..... चुनचुन कर दूर करने होगे ।
८. पानी के जीवो के प्रति..... पानी के दुर्व्यय को अटकाता है ।
९. सुसंस्कारो के सिंचन के लिये अच्छे..... होना जरुरी है ।
१०. जीव जिससे जीता है वो ..... कहलाता है ।
११. समाज या शासन के हित से भी अधिक हमारे ..... की कींमत होती है ।
१२. प्रभु के दर्शन से ..... को जातिस्मरण ज्ञान हुआ ।
१३. ..... देव, गुरु, धर्म की निंदा करने में भी पीछेहठ नहीं करता ।
१४. अपना जीव ही ..... बनने का अधिकारी है ।
१५. भाषा ..... याने निर्वद्य पाप रहित वचन बोलना ।
१६. केवलज्ञानी को ..... ज्ञान होता है ।
१७. आनंदरहित ऐसे ..... देवों नें अग्नि प्रज्वलित की ।
१८. सर्वविरति रूप चारित्र लेकर मोक्ष के अनुष्ठान को साधे वो..... मुनिराज कहलाते है ।
१९. ..... हमें कई पापों से बचाती है ।
२०. ज्ञान और ..... जीवन के मुख्य दो गुण है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. जीव हो वहाँ चारित्र होता है तो चारित्र हो वहाँ क्या होता है ?
२. कोई भी जीव की हिंसा न करना वह कौनसा महाव्रत है ?
३. किसका गुलाम कभी भी सुखी नहीं होता ?
४. धर्मचक्र तीर्थ की स्थापना किसने की ?
५. कांदा, लसण खाने से किसका प्रमाण बढता जाता है ?
६. जीवन का शृंगार क्या है ?
७. जीव जब विषय चिंतन में समर्थ होता है तब कौनसी पर्याप्ति की समाप्ति होती है ?
८. पिता के वचनपूर्ति के लिये किसने वनवास स्वीकारा ?
९. यदि संयोग में हर्ष है तो वियोग में क्या होगा ?
१०. नमि, विनमि की भक्ति देखकर कौन प्रसन्न हुआ ?
११. उपाध्याय के समीप रहने से किसका लाभ होता है ?
१२. शंख जीव के कौन से भेद में आता है ?
१३. महापुरुषो के मार्ग का अनुसरण करने के लिए जीवन में कौन से गुणो की आवश्यकता है ?
१४. विविध प्रकार के जीवों का भंडार कौन है ?
१५. छोडने जैसा संसार तो स्वीकारने जैसा क्या ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. पमुहा २) पज्जता ३) विगला ४) घ्राण ५) वणसर ६) गुमान ७) मंडलिमुह ८) तवो ९) खमासमणो
१०. गणतण ११) मत्थअेण १२) वीरियं १३) जाल १४) दुहा १५) सग १६) कंदा १७) नायव्वा
१८. आण-पाण १९) विज्जु २०) जियाणा

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) कलुषित वातावरण	१) इच्छा निरोध	६) वेश	६) अभिनिवेश
२) जटाधारी	२) पुरुषार्थ	७) प्रवर्तिनी महतरा	७) कषाय
३) हारमोनियम	३) ब्राह्मी	८) भावतप	८) वायुकाय
४) लोभ	४) कप्पिया	९) उपांग	९) अग्नि
५) सर्वभक्षी	५) साधु	१०) धर्म	१०) उद्भट

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. जीव के भेद कितने ?
२. धरणेन्द्रने नमि-विनमि को कितनी हजार विधाऐं दी ?
३. पंच परमेष्ठि के गुण कितने ?
४. मद के प्रकार कितने ?
५. तेइन्द्रिय के प्राण कितने है ?
६. ज्ञान पाँच है तो अज्ञान कितने ?
७. शत्रु के प्रकार कितने ?
८. ऋषभदेव प्रभु के साथ कितने हजार मुनि मोक्ष गये?
९. अंग कितने है ?
१०. श्रावक के गुण कितने है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. उपद्रव युक्त स्थानों में अच्छे व्यक्तिओं का संग दुर्लभ होता है ।
२. समवायांग उपांग का नाम है ।
३. खटमल पंचेन्द्रिय जीव है ।
४. जीवन को सुंदर बनाना हो तो जीवन स्वच्छ बनाना आवश्यक है ?
५. अर्णिकाचार्य को मिथ्यात्वी देव ने उपसर्ग किया ।
६. माता पिता के उपकारों का स्मरण हमारे जीवन में सतत होना चाहिए ।
७. धन की तीन गतियां है १) दान २) वैभव ३) नाश ।
८. छद्मस्थ को प्रथम दर्शन फिर ज्ञान होता है ।
९. मान हमें सभी जगह प्रिय बनाता है ।
१०. सौधर्मेन्द्र ने प्रभु की उपर की बायीं दाढा ली ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. तप बिना जीव नहीं, जीव बिना तप नहीं ।
२. शरीर की शोभा टापटीप करे नहीं ।
३. हम अनादि काल से सच्ची दृष्टि के बिना ही इस संसार में भ्रमण कर रहे है ।
४. लाभ बढता है, वैसे लोभ बढता है ।
५. "पहला सुख है शरीर का स्वास्थ' ।
६. यावत् संसार के समस्त दुःखो से मुक्त हुए ।
७. अकुशल मन का विरोध ।
८. मोह कम होगा, उसके निमित्त से होने वालें क्लेश कंकास कम हो जायेंगे ।
९. आजकल करकसर का गुण ही गायब होते जा रहा है ।
१०. अतः वे मौन ही रहे ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. जयणा २) धर्मचक्र तीर्थ ३) निंद्य प्रवृत्ति का त्याग ४) ओम् ५) आहार पर्याप्ति

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अॅकेडमी, श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालीसगांव - ४२४ १०१. जि. जलगांव, मो. ९०२८२४२४८४
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com